परिणामों की उपेक्षा के साथ अंतर्विरोध की दुनया

लेखक

मोहमद बिन मुनावर अल हुनैनी

अंतर्विरोध की दुनया

शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से, जो बड़ा रहम करने वाला और माफ़ करने वाला है

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, और दरूद व सलाम हो उस नबी पर, जिन के बाद कोई दूसरा नबी नहीं है,

इस के बाद: -

कई लोगों की स्थितियों में अजीब और आश्चर्यों में से है की; उनमें दो अलग अलग प्रकार की समानताएं मिलती हैं, ज्ञान और अज्ञान, बुद्धि और मूर्खता, सच्चाई और झूठ, साहस और कायरता, न्याय और अन्याय, दोस्त और दुश्मन, और यह कभी कभी एक ही व्यक्ति, पुरुष या महिला, किसी में भी हो सकता है। और यह सब से आश्चर्य की बात है कि यह किसी व्यक्ति के अंदर अपने से ही या अपने दोस्त के खिलाफ हो सकता है, जिससे वह अपने व्यवहार में किसी अन्य व्यक्ति के लिए या किसी अन्य कार्य में अपने ही दोस्त के लिए दुश्मन बन जाता है, यह एक अजीब प्रकार का विरोधाभास दिखने को मिलता है। सभ्यता और ज्ञान के साथ साथ कोई भी राष्ट्र जितना अधिक आगे बढ़ता है, उनमें विरोधाभास की मात्रा बढती जाती है, और अक्सर दूसरों से अधिक हो जाता है, यही इतिहास में अब तक देखा गया है।

ध्यान दें: - हम व्यक्तिगत विरोधाभास के बारे में बात कर रहे हैं, अर्थात्, एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं के अधिकार के लिए कुछ हो जाता है, या किसी ऐसे व्यक्ति के अधिकार के खिलाफ जिसका उसके साथ कोई व्यक्तिगत संबंध होता है, जैसे कि सामान्य तौर पर पत्नी, माता-पिता या रिश्तेदार, या फिर सब से महान अल्लाह के अधिकार में, हमारा अर्थ हर चीज में उस की पूर्णता से मतलब नहीं है। बल्कि, हमारा मतलब काम करने की क्षमता से है, जिसमें इंसान की खुशी उसी में ही पूरी होती है।

विरोधाभास के तत्व: -

न्याय: - हर कोई इस का दावा करता है और इस को चाहता है, लेकिन कुछ ही लोग होते हैं जो इसे खुद या किसी और के खिलाफ इस को लागू करते हैं। इस में अधिकांश लोग, ईर्ष्या, लालच या आक्रामकता के विषय से जुड़ जाते हैं, और अधिक स्वार्थी, जिस के परिणाम अच्छे शिष्टाचार और संस्कार को भुला दिया जाता है। और सब से बड़ी विपत्ति यह होती है कि यह उसी व्यक्ति से प्रकट होता है, जो उसके निर्माता और प्रदाता के लिए है। वह अल्लाह के गुण, कार्य, महिमा और धन्यवाद को अल्लाह के ही कमजोर प्राणियों के जीव के लिए शामिल करने लगता है, वह अल्लाह के इलावा अन्य की पूजा करने लगता है, और यही वह बिंदु है जहाँ पर उपरोक्त सभी विरोधाभास और अंतर्विरोध जमा नज़र आते हैं।

साहस: वीरता और साहस एक सराहनीय गुण है, कई लोग इस का दिखावा करते हैं, परंतु वास्तव में वे इस के लाइक नहीं होते हैं। जब अल्लाह उसका परीक्षण करता है, और उसे एक अल्लाह की इबादत करने का आदेश देता है, तो वह विफल रह जाता है, यही नहीं बल्कि वह बिना वैज्ञानिक या मानसिक प्रमाण के, मानव जाति में से अपने परिवार या अपनी पार्टी के आदेशों का पालन करता है, हालांकि वह सच्चाई को जानता है लेकिन वह अपने परिवार के डर से इसे लेने के लिए बाध्य पाता है, ऐसी ही स्थतियों में उनके कमजोर चरित्र के सामने साहस सामने आ जाता है।

सच्चाई: ऐसा आदमी जो दावा करता है, और उससे भी अधिक क़सम के साथ बोलता है कि वह सच्चा है, असल में वह झूठा होता है, झूठ बोलना कायरों का हथियार माना जाता है, चाहे वह उसके अपने खिलाफ हो या सत्य के अल्लाह के खिलाफ, जो उस का निर्माता और प्रदाता है, यह जानते हुए भी कि वह झूठा है, फिर भी वह उसे झूठा ठहराता है। कभी कभी वह अपने आप से भी झूठ बोलता है, जैसे कोई ऐसा व्यक्ति जो यीशु या बुद्ध की पूजा करता है, यह जानते हुए भी कि वे उसके जैसे मनुष्य हैं, और अंत में वे सब मर जाएंगे। और कुछ ऐसे भी लोग हैं जो उन जानवरों की पूजा करते हैं जिन की वह सेवा करता है और उन को शिकारियों से बचाता है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो अन्य प्राणियों की पूजा करते हैं जैसे सूर्य, चंद्रमा, तारे, समुद्र, और कई अन्य। वे कुछ ऐसे जीव हैं जो अंत में समाप्त हो जाएंगे, वह अपनी बुद्धिमत्ता से इनकार करते हैं, और वे कुछ ऐसे बयानों पर विश्वास करने लगे जिनके वैज्ञानिक या मानसिक कोई प्रमाण नहीं हैं।

चतुरता: यह एक ऐसी विशेषता है जिस से मनुष्य को ज्ञान और रचनात्मकता के साथ अलग करती है। यह बुद्धिमत्ता इस सांसारिक जीवन की नींव में, किसी भी व्यक्ति में हो सकती है, लेकिन उसके मृत्यु के बाद उसके साथ क्या होने वाला है? दुखी या ख़ुशी, ऐसे मामलों में उस के अंदर मूर्खता का प्रमाण मिलता है, चतुरता उस के अंदर माना जायेगा जो धोखा नहीं देता है, और किसी भी मामले को अनुमान के साथ नहीं लेता है, भले ही उस मामले का समाचार उसके किसी मित्र की ओर से हो, यह हो सकता है कि उस के मित्र के पास कोई ज्ञान और स्पष्ट प्रमाण न हों, ऐसे मामलात से संबंधित समाचार को सत्य नहीं मानना चाहिए जब तक की उसे सिद्ध करने के लिए सबूत न हो। यह बहुत अजीब बात यह है कि शिक्षित लोग चिकित्सा को उस वक़्त तक स्वीकार नहीं करते हैं, जब तक कि वह किसी सक्षम अधिकारियों या किसी विश्वसनीय स्रोत से द्वारा अनुमोदित न हो, यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन जो ज्ञान वे अपने पूर्वजों से अपनी आख़िरत की जीवन शैली के बारे में प्राप्त करते हैं, उसका कोई वैज्ञानिक या मानसिक प्रमाण नहीं होता है, और वे इसकी वैधता के बारे में भी नहीं पूछते हैं, जैसे कि यह उन के लिए चिंता का विषय नहीं है, इस को बुद्धिमत्ता नहीं, बल्कि मूढ़ता कहा जायेगा।

ज्ञान: ज्ञान समाज में एक सम्मान और गौरव की बात होती है। लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा, यह इस सांसारिक जीवन के कुछ विषयों में तो हो सकता है, परंतु वे इस के बाद वाले जीवन के मार्गों में अज्ञान बना रहता है, जो सांसारिक जीवन के रास्तों से अधिक महत्वपूर्ण है। रात में चलने वाले के लिए, ज्ञान एक प्रकाश की तरह होता है, और जिसके पास ज्ञान नहीं होता है वह अंधे की तरह होता है। यानी दूरदर्शिता का अंधापन दृष्टि का अंधापन नहीं होता है, प्रत्येक मनुष्य के लिए जीवन का समय एक सीमित समय होता है, और मृत्यु के बाद ही यह समाप्त हो जाता है, और एक अंतहीन निरंतर जीवन के लिए क़यामत के दिन सभी को पुनर्जीवित किया जाएगा। सुख या दुख बहुत सारे लोगों को पता होता है, लेकिन सिवाय कुछ लोगों के, बहुत कम लोग इस के लिए तय्यारी कर पाते हैं, यह अज्ञानता और अंतर्विरोध की ऊंची मिसाल है। और अंतर्विरोध किसी व्यक्ति के स्वयं के अधिकार में होता है तो वह बहुत अजीब बात होती है कि, परंतु यह किसी और के खिलाफ हो , तो यह आश्चर्य की बात नहीं होती है।

अंतर्विरोध की धुरी: -

जब कोई व्यक्ति अपने आप को, या किसी ऐसे व्यक्ति के खिलाफ, जो उसके साथ एक सामाजिक या भाग्यवादी संबंध रखता है, जैसे कि रब के साथ उसका संबंध जो उसका प्रदाता है, यहां इस के करने वाले के हक में सभी विरोधाभास उठ खड़े हो जाते हैं, उसके और उन तत्वों, या उनमें से कुछ के बीच संघर्ष शुरू होजाता है, और अक्सर परिणाम विफलता ही होती है। कुछ ही लोग

होते हैं जो इस मनोवैज्ञानिक लड़ाई में जीत प्राप्त कर पाते हैं, जिन को किसी निश्चित सफलता की चाहत होती है, तो उसे दुनिया और उसके बाद वाली जीवन का व्यापक ज्ञान होना चाहिए, जिसका सोर्स सामान्य रूप से मनुष्यों के लिए भगवान और उसके नबी होते हैं, इस में स्वतंत्रता का झूठ शामिल नहीं होता है, (आप जो चाहें, करें), इस बात में बहुत से लोग धोखा खा चुके हैं, यदि ऐसा होता, तो अल्लाह नबियों को नहीं भेजते और लोगों के लिए किताबें न उतारते, बल्कि, वह उन्हें जानवरों की तरह, जो चाहते करने देते। लेकिन अल्लाह ने इस को दुनिया में और उसके बाद के जीवन के लिए उनकी खुशी के हित में, ज्ञान को अपने आदेश पर कार्य करने और निषेध पर रोक लगाने को वाजिब क़रार दिया।

अल्लाह और उनके नबियों दुवारा मानव जाति के लिए वैज्ञानिक और मानसिक सबूत के साथ सच्चाई को स्पष्ट करने के बाद, अल्लाह ने उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दी, इसी पर कुरआन करीम में है:

﴿إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا

और उसको रास्ता भी दिखा दिया (अब वह) ख़्वाह शुक्र गुज़ार हो ख़्वाह न शुक्रा (अल इंसान: 3) हमने उसे मार्गदर्शन, भ्रम, अच्छाई और बुराई का रास्ता दिखाया, ताकि वह या तो इमान लाने वाला इंसान बने या फिर इंकार करने वाला काफ़िर। सत्य के मार्ग के लिए जीवन, दृढ़ संकल्प, प्रयास और धैर्य की आवश्यकता होती है। जिस के दौरान सच्चाई से झूठा, अज्ञान से वैज्ञानिक, कायर से बहादुर और मजबूत से कमजोर प्रकट होता है, आख़िरत के लिए कार्य पुरस्कारों को क़यामत के दिन पर स्थगित कर दिया गया है, जन्नत और खुशी का कोई अंत नहीं और इस की कोई मृत्यु नहीं हो सकती। और असत्य का मार्ग, जिस को शैतान ने मनुष्य के लिए स्वतंत्रता और दुनिया के तत्काल प्रलोभनों के साथ धोखे से सुंदर रूप में पेश किया है, जिस का अंत नर्क है, जिस से बचा नहीं जा सकता, जहाँ ऐसा जीवन होगा जिसमें मृत्यु नहीं होगी और ऐसा पीड़ा होगा जो अंतहीन होगा।

मानव शारीरिक और नैतिक बनावट का ज्ञान: - किसी व्यक्ति के शारीरिक बनावट , भौतिक और नैतिक और उनके स्रोतों का ज्ञान और उन्हें कैसे प्राप्त करें?

हम पाठक को वैज्ञानिक, मानसिक और तथ्यात्मक प्रमाणों के साथ इसे जानने और प्राप्त करने के लिए संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं: -

अल्लाह ने मनुष्य को दो तत्वों, शरीर और आत्मा (रूह) से बनाया है:

1 / शरीर: अल्लाह ने इसे मिट्टी से बनाया है, और मिट्टी में ही इस का जीवन प्रदान किया है, यह सब जानते हैं। लेकिन इसकी कीमत प्राप्त करने और जीवन की आवश्यकताओं के मालिक को भुगतान करने के लिए, जैसे कि भोजन, पेय, कपड़े, आवास और नावें आदि, यह केवल प्रयास और थकावट के साथ ही हो सकता है।

2 / आत्मा (रूह): अल्लाह ने इसे आसमान से बनाया है, और इस की खोराक और खुशी को आसमान से बनाया है। और यह इसी तरह, उसे भी अपने मालिक को कीमत चुकाने के बिना उसकी खोराक नहीं मिलती है। लेकिन यह कीमत पृथ्वी के जीवन की आवश्यकताओं की कीमत से अलग होती है। अर्थात्, यह भौतिक नहीं बल्कि नैतिक होती है। यह अल्लाह से प्राप्त किया जाता है जो इसका मालिक है, उसने जो आज्ञा दी , उसका वह पालन किया, और जिस से रोका, उस से वह परहेज किया, वह अल्लाह की ओर से एक परीक्षा होती है कि क्या वह अल्लाह के आदेश का पालन करता है या उसकी अवज्ञा करता है। जैसा की हमारे

पिता आदम (उस पर अल्लाह की शांति हो), उसे भी पेड़ से खाने से मना किया, लेकिन वह नहीं माने और उससे खाया, इसलिए उसे दंड के रूप में स्वर्ग से पृथ्वी पर उतार दिया।

ध्यान दें: अल्लाह कुछ लोगों को इस सांसारिक जीवन में ही किसी अग्रिम मूल्य का भुगतान किए बिना उस की खुशी उसे दे देता है। लेकिन क़यामत के दिन उस की कीमत का भुगतान किया जाएगा। और इस की कीमत उन लोगों के लिए जो अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और दूसरों की पूजा करते हैं और दूसरों के लिए अल्लाह के गुण और विशेषताओं और कार्यों का श्रेय देते हैं, अल्लाह क़यामत के दिन उन को नर्क में डाल देगा हमेशा के लिए, उनके लिए कोई मृत्यु नहीं होगी और पीड़ा अंतहीन होगी।

महत्वपूर्ण सवाल: -

मनुष्य के निर्माण का उद्देश्य क्या है? क्या मैं एक सभ्य जीवन के लिए मुफ्त में सामग्री दिया जाऊंगा, या कोई और कारण है?

इसका उत्तर अल्लाह ने कुरआन करीम में दिया है:

(وما خلقت الجن والإنس إلا ليعبدون)

और मैने जिनों और आदमियों को इसी ग़रज़ से पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें (अल ज़ारियात: 56) हर वह कोई जो किसी एक धर्म का पालन करता है, वह जानता है कि जिसने उसे बनाया वह अल्लाह और वह प्रदाता है, और उनमें से कई ऐसे हैं जो अल्लाह के साथ अपने रिश्ते को अनदेखा कर देते हैं। कुरआन करीम में है:

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ

तो क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि हमने तुमको (यूँ ही) बेकार पैदा किया और ये कि तुम हमारे हुज़ूर में लौटा कर न लाए जाओगे (अल मुमेनून: 115)

यहाँ पर जीवन में मनुष्य के अस्तित्व का महत्व, और मृत्यु के बाद उसका भाग्य, और वह भगवान के पास लौट आएगा, और उस से क़यामत के दिन पूरा हिसाब लिया जायेगा , यह तमाम तत्व पाठक को स्पष्ट हो जाता है। प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को अफसोस होगा जिसने अपने उस अल्लाह के साथ अपने संबंधों को नहीं सुधारा, जिसने उसे बनाया और अपनी नेमत दी, उसके इस सत्यापन के साथ कि अल्लाह ही निर्माता, जीवन देने वाला, जीवन लेने वाला और मृत्यु देने वाला है, फिर भी उस ने दूसरों की पूजा की, या अल्लाह जैसा चाहता था, वैसा उस ने अल्लाह की इबादत नहीं की, अजीब बात यह है कि वे जानते हैं कि मृत्यु के बाद एक जीवन है और इस का हिसाब होगा, उन्होंने यह तलाश नहीं किया कि अल्लाह किया चाहता है, और क्या करने की आज्ञा देता है, ताकि वे खुद कुछ अच्छा काम करें, जो वे अल्लाह के सामने क़यामत के दिन पाएंगे, इसलिए जो कोई भी अल्लाह की आज्ञाओं की उपेक्षा करेगा, वे क़यामत के दिन उसे अपने सामने पाएंगे, और उस समय उनके पास अल्लाह के साथ कोई बहाना नहीं होगा।

बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि असल में अल्लाह एक है, क्योंकि वे विभिन्न धर्मों के बारे में बड़ी संख्या में ऐसा सुनते रहते हैं, और वे सोचते हैं कि धर्म वैकल्पिक, मन चाहा, या पक्षपातपूर्ण है, और हर राष्ट्र के लिए एक धर्म है, यही कारण जो वे अपने बाप दादा और अपने बड़े लोगों से विरासत में प्राप्त करते आये हैं, वे इस मामले को बड़ी सफ़लता से लिये और यह नहीं जानते कि मृत्यु के बाद वास्तव में उनके साथ क्या होगा। कुरआन करीम में है:

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ

(ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि भला कहीं जानने वाले और न जाननेवाले लोग बराबर हो सकते हैं (मगर) नसीहत इबरतें तो बस अक़्लमन्द ही लोग मानते हैं (अल ज़ुमर: 9) अर्थात: दिमाग वाले लोग।

अल्लाह ने प्रत्येक राष्ट्र को उन्ही की भाषा में एक पुस्तक के साथ एक रसूल भेजा और उनमें से कुछ ने इस पर विश्वास किया, लेकिन उस रसूल की मृत्यु के बाद, बुरी नीयेत रखने वाले लोगों में से कुछ ने अपनी पुस्तकों को भ्रष्ट कर दिया, और अल्लाह, खुद अपने और दूसरों के बारे में झूठ गढ़ लिया, और कहा की यही किताब अल्लाह की है और यह विकृत नहीं है, विकृति और गलत बयानी अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करने का प्राथमिक कारण है। सभी पुस्तकों से एक अल्लाह की पूजा करने का पता चलता है, कुछ समय बाद, रसुलौं के प्रति उनका अधिक लगाव और अल्लाह के प्रति उनकी श्रद्धा से ज्यादा रसुलौं की वंदना, उन्हें अल्लाह की जगह उनकी पूजा करते करते उन्हें भगवान बना दिया। उदाहरण के लिए: यीशु, जो एक रसूल और नबी थे, वह कोई भगवान नहीं थे, जैसा कि वे दावा करते हैं। वे उसकी दिव्यता को परिभाषित करने में भिन्न थे, कुछ ने कहा कि वह ईश्वर है, दूसरे ने कहा कि ईश्वर का पुत्र है, और कुछ ने कहा कि वह तीसरे का तीसरा ईश्वर है, और वे दावा करते हैं कि क़यामत के दिन यीशु उनकी ओर से उनके पापों को सहन करेंगे। इसी तरह, बुद्ध उन के मानने वालों की ओर से अल्लाह के साथ अपने पापों को सहन करेंगे, और उन्होंने अपने धर्म की वैधता की खोज नहीं की, बल्कि वे इस धर्म को अपने बाप दादा और अपने आकाओं की आज्ञा का पालन किया, यही (अंधा आज्ञाकारिता) है, हालांकि वे जानते हैं कि यीशु और बुद्ध में मनुष्यों के सभी गुण पाए जाते हैं, और अंत में वे मर जायेंगे, कुछ ऐसे लोग हैं जो जानवरों, आग, समुद्र, पहाड़ों और कई अन्य चीजों की पूजा करते हैं, जो बेहद अजीब और खतरनाक हैं। इन झूठे विश्वासों का अंत क़यामत के दिन नर्क में जाना होगा, जैसा कि अल्लाह ने कुरआन करीम में कहा है:

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا (66) **وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا (67)** رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا (68)

जिस दिन उनके मुँह जहन्नुम की तरफ फेर दिए जाएँगें तो उस दिन अफ़सोसनाक लहज़े में कहेंगे ऐ काश हमने ख़ुदा की इताअत की होती और रसूल का कहना माना होता (66)
और कहेंगे कि परवरदिगार हमने अपने सरदारों अपने बड़ों का कहना माना तो उन्हों ही ने हमें गुमराह कर दिया (67)
परवरदिगारा (हम पर तो अज़ाब सही है मगर) उन लोगों पर दोहरा अज़ाब नाज़िल कर और उन पर बड़ी से बड़ी लानत कर (अल अहज़ाब: 68)

और कुरआन करीम में है:

قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फिल हक़ीक़त घाटे में वही लोग हैं जिन्होंने अपना और अपने लड़के वालों का क़यामत के दिन घाटा किया (अल ज़ुमर: १५)

और अल्लाह ने इस्लाम धर्म के राष्ट्र के साथ अन्य राष्ट्रों का अंत किया है, और नबियों का अंत पैगंबर मोहमद (अल्लाह का दरूद व सलाम हो उन पर) के साथ किया, और पवित्र कुरान के साथ सभी पुस्तकों का अंत क्या। वही अल्लाह है जिसने नबियों

को सामान्य रूप से भेजा है, और सामान्य रूप से पुस्तकों को नीचे भेजा, ताकि वे लोगों को प्रचार करें और क़यामत के दिन की चेतावनी दी। कुरआन करीम में है:

رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ

और हमने नेक लोगों को बेहिश्त की ख़ुशख़बरी देने वाले और बुरे लोगों को अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बर (भेजे) ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों की ख़ुदा पर कोई हुज्जत बाक़ी न रह जाए और ख़ुदा तो बड़ा ज़बरदस्त हकीम है (ये कुफ़्फ़ार नहीं मानते न मानें) (अल निसा: 165)

तो अल्लाह जो निर्माता और प्रदाता है, उस के सामने क़यामत के दिन का कोई बहाना नहीं होगा। जिन्होंने उनके लिए उन के जीवन की नींव बनाई और किताबों और रसुलौं और नबियों को भेजा, और उन्हें एक अल्लाह की इबादत करने के लिए वाजिब क़रार दिया।

अल्लाह के न्याय और सामान्य रूप से मनुष्यों की राष्ट्रीयता, रंग, ताकत और कमजोरियों के बावजूद, उन की दया में से यह है की अल्लाह ने अपने फ़जल से उनके साथ अपनी गरिमा को बाक़ी रखा, क्योंकि वे उनके आदेशों का पालन करते थे, और अल्लाह ने मना किया था, उससे वह बचते थे, कुरआन करीम में है:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

लोगों हमने तो तुम सबको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हम ही ने तुम्हारे कबीले और बिरादरियाँ बनायीं ताकि एक दूसरे की शिनाख़्त करे इसमें शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक तुम सबमें बड़ा इज़्ज़तदार वही है जो बड़ा परहेज़गार हो (अल हुजुरात: १३) तक्वा का अर्थ है (अल्लाह का खौफ़ और उसके और उसके रसूल की आज्ञा करना), यही सच और उचित उपाय है। अर्थात्, मनुष्य के साथ पेश होने वाली हर चीज, चाहे वह अच्छे हो या बुरे, उन के कर्मों के कारण होती है, और अल्लाह के साथ उनका संबंध अच्छा या बुरा के कारण होता है। और यह कि अल्लाह अपनी किसी भी निर्माण पर अत्याचार नहीं करता, कुरआन करीम में है: -

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

और हमने तो (इस की वजह से) उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया (अल नहल: 118) अर्थात, प्रत्येक व्यक्ति जिसने जो अपने लिए चुना और क़यामत के दिन अपने भाग्य के लिए काम किया, और जो कुछ भी उस ने किया है उसे वह अपने सामने पायेगा, यदि उस का कार्य अल्लाह के आदेश के अनुसार होगा तो अल्लाह उसे जन्नत में भेज देगा, और यदि यह अन्यथा था, तो अल्लाह उसे नर्क में डाल देगा।

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, और दरूद व सलाम हो उस नबी पर

लेखक (अपने रब से माफ़ी का चाहने वाला)

मोहमद बिन मुनावर अल हुनैनी